REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2022

''कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता का भौगोलिक अध्ययन : आठनेर तहसील के विशेष संदर्भ में''

अनिल कुमार मोहबे[1] , प्रो. विजय कुमार सिंह[2]
[1]शोधार्थी, एम.फिल. (भूगोल)
[2]शोध –निर्देशक, विशेष सहायक, माननीय मंत्री , खनिज साधन एवं श्रम मध्य प्रदेश शासन.

सारांश

भारत कृषकों का देश हैं। इस देश की लगभग 68 प्रतिशत आबादी आज भी कृषि कार्य में लगी हुई है। भारत एक विकासशील राष्ट्र है। किसी भी राष्ट्र को विकसित राष्ट्र तब कहा जा सकता है जब उस देश का आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक सभी प्रकार से विकास हुआ हो अर्थात् राष्ट्र में क्रांति का क्षेत्र काफी विस्तृत हो। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने, भारतीय नागरिकों के जीवन स्तर को ऊँचा करने हेतु कृषि पर विशेष ध्यान देना होगा। भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है, क्योकि राष्ट्र की आर्थिक संरचना में कृषि एक आधारभूत स्तंभ का उत्तरदायित्व निभाती है। कृषि भारतीय अर्थव्यस्था का सर्वप्रमुख व्यवसाय है। यह प्रदेश के कई उद्योगों के लिये कच्चे पदार्थ की आपूर्ति और कई उद्योगों के उत्पादन की माँग का आधार है। यह देश की दो तिहाई जनसंख्या की आजीविका का साधन और विभिन्न उत्पादक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति के बाद का राष्ट्रीय सर्वाधिक राशि आय में योगदान करने वाला क्षेत्र है। प्रस्तुत शोध पत्र में मध्य प्रदेश में कृषि उत्पादन एवं कृषि उत्पादकता के स्वरूप का अध्ययन किया गया है।

मूल शब्द : आठनेर तहसील, कृषि, कृषि विकास, खाद्यान्न, घरेलू उत्पाद।

प्रस्तावना

भारत वर्ष में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है और कृषकों की आय का मुख्य साधन कृषि है। बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण विश्व में मनुष्यों को पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न उपलब्ध न हो पाने के कारण भुखमरी व कुपोषण जैसी भयावह समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। विश्व में खाद्य व्यवस्था को नियंत्रित करने वाले खाद्य एवं कृषि संगठन की रिपोर्ट के अनुसार 1997 से 2007 के मध्य विश्व में भूखे लोगों की संख्या में कई गुनी बढ़ोत्तरी हुई है। इसमें बच्चों की संख्या सर्वाधिक आँकी गई है। हर क्षण एक बच्चा भुखमरी के कारण दम तोड़ रहा है। 90 करोड़ भूख से ग्रस्त लोगों में करीब 98 करोड़ लोग विकासशील देशों में है और हमारा देश भी विकासशील देश है, जिसमें भुखमरी ज्वलंत समस्या है। विज्ञान व तकनीकियों का लगातार विकास हो रहा है, फिर भी आज हमारे देश में लाखों लोग बेरोजगार है उनके हाथों का काम सरकार ने और मशीनों ने छीन लिया है। किसानों की जमीन बांध या अन्य सरकारी योजनाओं के लिये छीन तो ली है, पर आज तक उन्हें कोई पुनर्वास या स्थायी रोजगार जैसी योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा है।

किसानों की रोजी–रोटी का प्रमुख साधन कृषि है। आज कृषि में मशीनीकरण होने के कारण लाखों कृषि से जुड़े मजदूर बेरोजगार हो गये हैं। उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में गिरावट आई है। उनके परिवार में पैदा हुए बालक–बालिकाएं अच्छे स्वास्थ्य अच्छी शिक्षा से वंछित रह जाते हैं। फिर कोई कैसे कह सकता है, कि भारत उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है। भौतिकवादी युग का चरम समय है, फिर भी विश्व में खाद्य समस्या का समाधान नहीं हो सका। इसके पीछे निम्नलिखित कारक उत्तरदायी हैं –

1. तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या।
2. प्राकृतिक विपदाएँ।
3. भौगोलिक सीमाओं मे विविधता।
4. पोषक तत्वों की कमी।
5. कृषि में उन्नत तकनीक का अभाव।
6. आर्थिक स्तर में कमी।
7. आहार प्रतिरूपता।
8. क्षेत्रफल की दृष्टि से मध्यप्रदेश देश का दूसरा बड़ा राज्य है, जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 308 लाख हेक्टेयर है जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 9 प्रतिशत है। मध्यप्रदेश 7.2 करोड़ की कुल जनसंख्या के साथ देश का छठा बड़ा राज्य है, जिसकी 72 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण इलाकों में रहती है। मध्यप्रदेश में जंगल, खनिज, नदियां और घाटियां 11 तरह के कृषि जलवायु क्षेत्र, पांच तरह के फसली जोन और जमीन का विविधतापूर्ण उपयोग, मिट्टी के विभिन्न प्रकार, वर्षा और जल संसाधन भी हैं, जिनका फैलाव 51 जिलों में है, इसके अलावा मध्यप्रदेश में अनुसूचित जाति और आदिवासियों की भी एक बड़ी संख्या है, जो कुल मिलाकर मध्यप्रदेश के 35 प्रतिशत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं।
9. मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था मौसम पर आधारित और कृषि पर निर्भर है। राज्य की अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र अग्रणी है और राज्य की ग्रामीण जनसंख्या (72 प्रतिशत) को रोजगार और आजीविका उपलब्ध कराने वाला यह अकेला क्षेत्र भी है।
10. जनगणना 2001 के अनुसार राज्य के कुल कामगारों का 69.8 प्रतिशत और ग्रामीण कामगारों का 85.6 प्रतिशत आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। इसमें 31.2 प्रतिशत किसान और 38.6 प्रतिशत कृषि मजदूर शामिल है। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 24.4 प्रतिशत है। इसीलिए राज्य की विशेषकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए इस क्षेत्र की लगातार सकारात्मक विकास दर बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है। साथ ही यह राज्य और देश की अर्थव्यवस्था में पर्यावरणीय स्थिरता की दृष्टि से प्रभाव डालने की क्षमता भी रखता है।
11. कृषि का महत्व तब और बढ़ जाता है, जब ग्रामीण आबादी का एक बड़ा अनुपात आजीविका की बुनियादी जरूरत को पूरा करने के लिए प्रत्यक्ष गतिविधि या अप्रत्यक्ष संदर्भ मे कृषि पर निर्भर है। कृषि से जुड़ी प्रत्यक्ष गतिविधि में अपने उपभोग और बाजार में उत्पाद को बेचने, पशु चारे के रूप में और कृषि से जुड़े लोगों को रोजगार देने के लिए फसल उगाना भी शामिल है। आय बढ़ाने के जरिये के तौर पर कृषि कार्य गरीबी को कम करने, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र की गरीबी को काबू पाने का एक साधन भी है।

अतः स्पष्ट है कि कृषि क्षेत्र में विकास और नागरिकों के सामाजिक व आर्थिक विकास में सीधा संबंध है क्योंकि यह क्षेत्र आहार और पोषण सुरक्षा निश्चित करने के अलावा आमदनी बढ़ाने व रोजगार के अवसरों में वृद्धि करने की संभाव्यता के कारण गरीबी पर सीधे प्रहार करता है। इसलिए राज्य की अर्थव्यवस्था विशेषकर, ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मे सकारात्मक परिवर्तन के लिए कृषि वृद्धि दर में बढ़त को निरंतर बनाए रखकर इसे लाभकारी व टिकाऊ बनाना व आने वाले वर्षों मे लाभ प्रदत्ता पर ध्यान देते हुए सिंचाईं सुविधाओं के विस्तार द्वारा प्रमुख फसलों के उत्पादन व उत्पादकता को पंजाब व हरियाणा जैसे कृषि समूह राज्यों व होशंगाबाद, छिंदवाड़ा, जैसे जिले के समकक्ष लाना सरकार के लिए यह एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

प्रस्तावित शोध का अध्ययन क्षेत्र– प्रस्तावित शोध हेतू शोधकर्ता ने मध्यप्रदेश राज्य के बैतूल जिले की आठनेर तहसील का चयन किया है। आठनेर बैतूल जिले से 32 कि.मी. दक्षिण में स्थित है। यह तहसील एक चौथे क्रम का प्रशासनिक और राजस्व विभाग है, जो मध्य प्रदेश के तीसरे क्रम के प्रशासनिक और राजस्व प्रभाग का उपखंड है। शोध क्षेत्र को वर्तमान में नगर परिषद के रूप में भी जाना जाता है। इस तहसील का भौगोलिक

विस्तार 21.624उत्तरी अक्षांश से लेकर 77.913 पूर्वी अंक्षाश तक है। और इसकी सीमा 699.64 प्रति वर्ग कि.मी. है। वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर इसकी जनसंख्या 1,06,793 है। इसके दक्षिण पश्चिम, पश्चिम और उत्तर पश्चिम में भैंसदेही तहसील, उत्तर में बैतूल तहसील, और उत्तरपूर्व में मुलताई तहसील (जहाँ से ताप्ती नदी का उदगम होता है।) की सीमा लगती है। आठनेर की भौगोलिक सीमा से महाराष्ट्र राज्य के अमरावती जिले की सीमा भी लगती है। इस तहसील के अंतर्गत 108 गाँव आते है। और 55 ग्राम पंचायत शामिल है जिनमें, हिड़ली, पुसली और मांडवी प्रमुख पंचायतो में शामिल है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य–

किसी भी अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य सामान्यीकृत प्रकार के कुछ ऐसे तथ्यों, सिद्धांतों अथवा उपयोगों का पता लगाना होता है जो कुछ नवीन ज्ञात प्रदान करके मानव जाति की समस्याओं का समाधान करने में सहायता प्रदान कर सकें। अनुसंधान सूचनाओं का संकलन मात्र नहीं है, वरन् यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें प्रदत्तों के संकलन तथा विश्लेषण के द्वारा नवीन तथ्यों व सिद्धांतों को प्रतिपादित करके ज्ञान भण्डार में वृद्धि करने के लिए वैज्ञानिक विधि का प्रयोग किया जाता है। व्यवहारिक अनुसंधान का उद्देश्य विभिन्न प्रकार की समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करके ऐसे समाधान खोजना है जो सर्वत्र प्रयुक्त किये जाने योग्य सिद्ध हो सकें।

1. आठनेर तहसील में कृषि भूमि उपयोग एवं कृषि उत्पादन के प्रतिरूपों का अध्ययन करना,
2. अध्ययन क्षेत्र में कृषि विकास के स्तरों में क्षेत्रीय विभिन्नता का आंकलन करना,
3. अध्ययन क्षेत्र में कृषिगत आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता एवं कृषि उत्पादन पर प्रभावों का अध्ययन करना,
4. अध्ययन क्षेत्र में कृषि उत्पादकता (आश्रित चर) एवं कृषि विकास के चुने गयें कारकों (स्वतंत्र चर) के मध्य संबंधों का अध्ययन करना।

साहित्य समीक्षा

वर्तमान में भारतीय विश्व–विद्यालयों के भूगोल के स्नातकोत्तर कक्षाओं में कृषि भूगोल एक पूर्णरूप में स्थापित विषय है तथा विभिन्न स्तरों पर इस पर अनेक कार्य हो रहे है। कृषि विकास एक विशेष वातावरण में कृषि भूमि उपयोग के सामाजिक एवं स्वामित्व सम्बन्धी दशाओं, तकनीकी एवं संगठनात्मक तथा उत्पादकता सम्बन्धी दशाओं का सम्मिलित एवं समन्वित प्रभाव होता है। कृषि विकास सम्बन्धी सन्तुलित अध्ययनों में जे. क्रोस्ट्रोविकी, प्रो. जसबीर सिंह एवं प्रो. एम.सफी. के अध्ययन सर्वाधिक महत्व के है।

प्रद्युम्न कुमार (2009), भारत में अनाज के लिए मांग के अनुमान इन्होंने अपने अध्ययन में यह पाया कि भारत वर्ष में वर्ष 2011–12, 2016–17 एवं 2021–22 में देश में ऊर्जा की आवष्यकता की सीमाएं, खाद्यान्नों की विवीधता के साथ उपभोक्ताओं की भोजन में पायी जाने वाली विविधताओं का विश्लेषण किया एवं यह भी बताने का प्रयास किया कि आने वाले वर्षो में देश को लगभग कितने मैट्रिक टन अनाज का उत्पादन करना होगा।

पाल, सुरेश एवं गिरीष कुमार (2011), भारत में खाद्य मूल्यों का वर्तमान चलन व उनका निरूपण शोधकर्ताओं ने अपने शोध में बताया कि अंतर्राष्ट्रीय खाद्यान्न मूल्य वैश्विक स्तर पर खाद्यान्नों की कमी के चलते तेजी से बढ़ रहे हैं। मुख्यतः गेंहूँ के उत्पादन में भारत सहित अन्य देशों में प्रतिकूल मौसम की परिस्थितियों के कारण उत्पादन में कमी आई है, वहीं दूसरी ओर एकल व संरचनात्मक कारकों ने भी मूल्य वृद्धि में मुख्य भूमिका निभाई है।

दिनेश कुमार एवं एस. शिवाय (2011), ने खाद्य सामाग्री के माँग व आपूर्ति पर प्रकाश डालते हुए बताया कि खाद्य वस्तुओं कीमतों के निर्धारण में खाद्य सामग्री किस प्रकार से एक मुख्य कारक का काम करता है। माँग व आपूर्ति के साथ खाद्य सामग्री का मेल न होने के कारण खाद्य वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होने के कारण कीमतें खाद्य संकट को बढ़ावा देती है। इसलिए देश में लंबे समय के लिए खाद्य वस्तुओं की बढ़ती हुई कीमतों में वृद्धि को रोकने के लिए खाद्यान्न उत्पादन ही एक मात्र साधन है। इसी से देश में बढ़ती हुई कीमतों को रोका जा सकता है।

सिंह, डॉ. वीणा (2013), ने ''पन्ना जिले में आधुनिक कृषि तकनीक एवं ग्रामीण विकास'' एक भौगोलिक अध्ययन में बताया कि आधुनिक कृषि तकनीकों का इस्तेमाल करने के कारण अधिक जनसंख्या भार के लिए खाद्यानों की आपूर्ति पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं कराया जा सकती है। इसीलिए कृषि की आधारभूत संरचना में नवीनतम तकनीकी के माध्यम से परिवर्तन करने की महती आवश्यकता है, जिससे पोषण और उत्पादन तथा ग्रामीण विकास के मध्य उत्पन्न विषमता की खाई को पाटा जा सकता है।

पार्वथी, सी. एवं अरूलसेल्वम (2013), भारत वर्ष में कृषि उत्पादन एवं खाद्य सुरक्षा का अध्ययन किया अपने अध्ययन मे उन्होंने बताया कि भारत वर्ष में हरित क्रांति के उपरांत की समयावधि मे आधारभूत खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि हुई है। साथ ही दालों की माँग में लगातार वृद्धि हो रही है जो 2020–21 तक 261 मिलियन टन तक पहुँच जायेगी। कृषि उत्पादन में वृद्धि की दर विशेषकर गेंहूँ एवं दाल की मांग की तुलना में कम बढ़ रही है परिणामस्वरूप माँग एवं पूर्ति में असंतुलन उत्पन्न हो रहा है।

आरमो, सी. एस. एवं अरूण बोरकर (2015), ने भारतवर्ष में कृषि भूमि उपयोग एवं खाद्यान्न फसलों के उत्पादन के प्रतिरूपों का विश्लेषण 1960–61 से 2012–13 तक की समयावधि का किया है। शोध के लिए द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया है, जिसमें मुख्यतः गेंहूँ की उपज, चावल एवं दलहनी उपजों के साथ ही भूमि उपयोग के लिए कुल कृषि भूमि, सिंचित कृषि भूमि, अंसिचित कृषि भूमि के आँकड़ें सम्मिलित हैं, का विश्लेषण के लिए वृद्धि दर एवं प्रतिशत हिस्सा का प्रयोग किया है। शोध में पाया कि भारतवर्ष में 1960–61 से 2012–13 तक की समयावधि में खाद्यान्न फसलों के उत्पादन के साथ–साथ भूमि उपयोग के प्रतिरूपों में व्यापक परिवर्तन हुए हैं।

शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध प्रबंध प्राथमिक तथा द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित होगाः–

प्राथमिक स्त्रोत– प्राथमिक तथ्य सामग्री का तात्पर्य उन सूचनाओं व आंकड़ों से है जिनको पहली बार संकलित किया गया हो तथा जिनके संकलन का उत्तरदायित्व शोध कर्ता या सर्वेक्षण कर्ता का अपना होता है।

द्वितीयक स्त्रोत– द्वितीयक स्त्रोत या तथ्य वे होते हैं जिन्हे मौलिक स्त्रोतों से एक बार प्राप्त कर लेने के पश्चात् काम में लिया गया हो एवं उनका प्रसारण अधिकारी उस व्यक्ति से भिन्न होता है जिसने प्रथम बार तथ्य संकलन किया था। अतः स्पष्ट है कि द्वितीयक तथ्य वे तथ्य होते हैं जिनका एकत्रीकरण स्वयं शोध कर्ता या सहायकों द्वारा नहीं किया गया हो, परंतु जिसमें अन्य अध्ययन हेतु किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा संकलित कर उपयोग किया गया हो।

प्रस्तावित शोध के प्राथमिक स्त्रोत–

अ. सर्वेक्षण।
ब. प्रश्नावली।
स. निरीक्षण।

प्रस्तावित शोध के द्वितीयक स्त्रोतः–

अ. आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, मध्यप्रदेश ।
ब. कृषि सांख्यिकी पुस्तिका।
स. जिलेवार सांख्यिकी पुस्तिका।
द. सामाजिक एवं आर्थिक सांख्यिकी।
इ. मध्यप्रदेश का सांख्यिकी संक्षेप।

निष्कर्ष

भारतीय कृषि संरचना के अध्ययन से स्पष्ट है कि कृषि क्षेत्र में विभिन्न श्रेणियों के बीच में भूमि के स्वामित्व, नियंत्रण, आय और जीवन के तौर–तरीके संबंधी अनेक अंतर पाए जाते हैं। कृषि क्षेत्र में व्याप्त सामाजिक असमानताओं और इनके संबंध में जागरूकता के बढ़ने के कारण वर्तमान समय में कृषक असंतोष

बढ़ता जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे किसानों, काश्तकारों, पट्टेदारी में खेती करने वालों और भूमिहीन श्रमिकों के जीवन में अनेक अभाव पाए जाते है। उनके अस्तित्व की दशाएं विचारनीय हैं और वे जीवन की साधारण सुख–सुविधाओं से भी अधिकांशतः वंचित हैं। यद्यपि हरित क्रांति से ग्रामों की काया–पलट तो हुई है, परंतु इसका लाभ अधिकांशतः कुछ थोड़े से धनी किसानों को हुआ है। छोटे किसानों, काश्तकारों तथा भूमिहीन श्रमिकों की स्थिति में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ है और विशेषतः बढ़ते हुए मूल्यों का इनकी भौतिक दशाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। मध्यप्रदेश में कृषि क्षेत्र की गतिविधियों को विशेष रूप से बढ़ावा देने की जरूरत है जिससे कार्यक्रमों, गतिविधियों के क्रियान्वयन से अच्छे परिणाम आ सकें ताकि कृषकों की फसलों का उपर्जान उत्पादन अनुसार संभव हो सके। मुख्य फसल गेहूं के उपार्जन से कृषकों की आर्थिक स्थिति बदल सके तथा खेती की तरफ उनका रूझान बढ़े। कृषि क्षेत्र में उत्पादन को बढ़ाने के लिये बीज रोपण की पद्धति को वैज्ञानिक खेती के उन्नत तरीकों को अपनायें.यद्यपि कृषि उत्पादिता एवं उत्पादन को प्रभावित करने वाले आकस्मिक, प्राकृतिक कारण मानवीय प्रक्रम से परे हैं, फिर भी सम्यक उपायों द्वारा उनकी भयावहता को घटाया जा सकता है। अभी तो स्थिति यह है कि प्रकृति के साथ देने पर ही हमारी योजनायें सफल होती हैं अन्यथा उस वर्ष समस्त विकास कार्यक्रमों के परिणाम नगण्य हो जाते हैं। अर्थव्यवस्था का विकास जिस प्रकार कृषि का अनुकरण करता है ठीक वैसे ही कृषि अनुकूल व प्रतिकूल वर्षा का अनुकरण करती है। प्राकृतिक प्रकोपों के प्रति सजगता को हमारे नियोजन में प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिए। यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि प्रकृति सदैव हमारे अनुकूल ही रहेगी। इसके साथ ही साथ जिन राज्यों में भूमि की संरचना और जलवायु कृषि विकास में स्थाई बाधक है वहाँ खेती के साथ–साथ संबद्ध व्यवसायों का विकास आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Aggarwal, A.N. (1981), Indian Agriculture, Mittal Publication, Delhi, pp. 160-160.
2. Bardhan, P. (1970), "Green Revolution and Agricultural Labourers", Economic and Political Weekly, Vol. 1, No. 29-31, pp. 52-52.
3. Bhalla, G.S. (1979), "Real Wage Rates of Agricultural Labourers in Punjab", Economic and Political Weekly, Vol. 14, No. 2, June, pp. 45-45.
4. Bharat, T. (2002), Employment Oriented Development, Website: www.manipuroline.com, pp. 1-3.
5. Bhaumik, Sankar Kumar (2007), "Growth and Composition of Rural Non-Farm Employment in India in the Era of Economic Reforms", The Indian Economic Journal, Vol. 55, Number 3, Oct-Dec., pp. 64-64.
6. Census of India (2001), "Provisional Population Totals", Distribution of Workers and Non-Workers, Series-4, Census Operations, Punjab, pp. 43-65.
7. Chellaswami, J. "Comparability of the Results of the First and Second Labour Enquiries", quoted in Rao, V.K.R.V. (1962), Agriculture Labour in India, Asia Publishing House, Institute of Economic Growth, New Delhi, pp. 49-50.
8. Dasgupta, B. (1978), Agrarian Change and the New Technology in India, UNRISD, Geneva.
9. Dutt, G. (1996), Bargaining Power, Wages and Employment, Oxford University Press, New Delhi.
10. Giri, R., (1969), "Change in land use pattern in Orissa", Indian Journal of Agricultural, Economics 24 (3) : 50-62
11. Gosh Jayati (2003), "Whatever Happened to Farm Employment", Frontline, Vol. 20, Issue 10, Website: www.hinduonnet.com.
12. Government of India (1956), Second Five Year Plan, Planning Commission, New Delhi, pp. 113-113.
13. Government of India (1960), "Agriculture Labour in India", Report on the Second Agriculture Labour Enquiry (1956-57), Labour Bureau, Ministry of Labour and Employment, Vol. 1.
14. Jha, P. (1997), "Economic Reforms and Agricultural Labourers", Economic and Political Weekly, Vol. XXXII, No. 20 and 22, May 30.
15. Joshi, P.K., D.K. Bahl and D. Jha (1981), "Direct Employment Effect of 36.
16. Kumar Dinesh and S. Shivay, (2011), "Sustaining Food Production to Stabilize Rising Food Prices", Indian Farming Vol: 67,No:7 Pp 10-16

17. Lal, D. (1976), "Agricultural Growth, Real Wages and the Rural Poor in India" (Review of Literature), Economic and Political Weekly, Vol. 11, No. 26, June, pp. A-47-A-80.
18. Mehta, Jaya(2004), "Changing Agrarian Structure in Indian Economy", Website: www.revolutionary.democracy.org.
19. Mukherjee, S.K. (1992), "Progress of Indian Agriculture: 1900-1980", Journal of History Science, 27(4), Website: www.new.dli.ernet.in.
20. Pant, S.P., (1983), "Growth & stagnation of Agricultural production: A Critical analysis with Special reference to M.P.", Indian Journal of Agricultural Economics 38(4): 557—657.
21. Papola, Tirlok Singh (1994), Employment Growth and Social Protection of Labour in India, Discussion Paper Series No.75, International Institute for Labour Studies, Geneva, Website : www.ilo.org, pp. 07-08.
22. Reddy, A. Amrender, (2004), "Consumption Pattern Trade and Production Potential of pulses", Economic and political weekly, Vol: 39 No. 49 , Oct 30 Nov (2004)
23. Ramaswami, C. (2004), "Constraints to Growth in Indian Agriculture", Indian Journal of Agriculture Economics, Mumbai, Jan-March, pp. 67-67.
24. Shetty, S.A., (1970), "Agriculture Production trend components", Indian Journal of Agricultural Economics 25(2) 28-46.
25. Singh, H.K.M. (1979), "Population Pressure and Labour Absorbility in Agriculture and Related Activities : Analysis and Suggestions based on Field studies conducted in Punjab", Economic and Political Weekly, Vol. XIV, No. 11, March 17, pp. 593-597.
26. Technical Change in U.P. Agriculture", Indian Journal of Agricultural Economics, Vol. 36, No. 4, pp. 4-6.
27. World Bank (1978), Agricultural Land Settlement, A World Bank Issue Paper, Washington, D.C.
28. Research, Ahmedabad, India, Website: www.wiego.org, pp.1-2.
29. www.researchersworld.com Vol.- IV,Issue – 1(1), January 2013 pp. 95-101
30. Researchsworld – Journal of Arts, Science & Commerce.
31. www.jaivikkheti in mp _govt.of Madhya Pradesh
32. M.p.gov.in/krishi/jaivik-kheti.
33. www.chouthiduniya.com/2010/10/jaivikkheti.

अनिल कुमार मोहबे
शोधार्थी, एम.फिल. (भूगोल)